श्रीनवद्वीपधाम महात्मय

SGD

श्रीलगुरुदेव

श्रीलगुरुदेव

श्रीगौरहरि

श्रीगौरहरि जी के श्रीनवद्वीपधाम की महिमा का वर्णन करने से पहले कुछ प्रमाणित शास्त्रों से लिये कुछ प्रमाणों का वर्णन किया जाएगा, जिनसे यह स्पष्ट अनुभव होता है कि श्रीगौरहरि जी कोई साधारण मनुष्य या कोई श्रीकृष्ण - भक्त नहीं है। वे तो साक्षात् नन्दनन्दन श्रीकृष्ण हैं जो कि भक्त - भाव को लेकर अपने ही माधुर्य का आस्वादन करने व युगधर्म श्रीहरिनाम - संकीर्तन का प्रचार करने

के लिए श्रीचैतन्य महाप्रभु जी के रूप में अवतरित के हुए हैं। आप श्रीगौरहरि, श्रीगौरांग, श्रीगौरांगदेव, श्रीगौरांग महाप्रभु, श्रीगौर नारायण, श्रीचैतन्यदेव, श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु व बचपन के नाम श्रीनिमाई इत्यादि विभिन्न नामों से जाने जाते हैं।

कलियुगपावनावतारी, औदार्य - लीला-रसमय-विग्रह, श्रीराधा कृष्णमिलित तनु, श्रीश्रीनवद्वीप - सुधाकर श्रीगौरसुन्दर, श्रीधाम - श्रीनवद्वीप के अन्तर्गत श्रीधाम - मायापुर में 1407 शकाब्द अर्थात् सन् 1486 की फाल्गुनी पूर्णिमा तिथि के सन्ध्या काल में अवतीर्ण हुए थे।

उन्होंने श्रीकृष्णप्रेम की अप्राकृत बाढ़ में सारे विश्व को डुबा कर, कलिहत जीवों के उद्धार का परम कल्याणमय कार्य किया था। इसलिये प्रतिवर्ष फाल्गुनी पूर्णिमा तिथि में, उनके आविर्भाव के उपलक्ष्य में भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व में उनके ही प्रचारित नाम संकीर्तन के साथ उनका दिव्य जन्मोत्सव मनाया जाता है। श्रीमन्महाप्रभु के सम्बन्ध में बहुत से -व्यक्तियों की बहुत प्रकार की भ्रान्त धारणाएँ हैं। उन धारणाओं के वशीभूत होकर, कोई कोई उन्हें भक्तश्रेष्ठ, एक बड़ा साधक, असाधारण पुरुष, महामानव आदि नाना प्रकार की आख्या देते हैं। किन्तु

वे तो स्वयं भगवान हैं, इस विषय में अनेकों को मालूम ही नहीं है। यह भी एक सनातन सिद्धान्त है कि भगवान को पहचानने या जानने के लिये, भगवान की कृपा के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है। अर्थात् भगवान की कृपा से ही भगवान को जाना जा सकता है व प्राप्त किया जा सकता है। अपनी चेष्टा से भगवान को पहचाना या जाना नहीं जा सकता है

श्रीचैतन्यचरितामृत में कहते हैं —

ईश्वरेर कृपालेश हय त' याहारे।
सेइ त' ईश्वर - तत्त्व जानिवारे पारे ।।
(चै०च०म० 6/83)

अर्थात् ईश्वर की जिन पर कृपा हुई है, वे ही ईश्वर - तत्त्व कठोपनिषद् में कहते हैं को जानने में समर्थ हैं।

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया
न बहुना श्रुतेन।
यमेवैष वृणुते तेन लभ्य- स्तस्यैष
आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम् ॥
(कठ० 1/2 / 23)

अर्थात् उन परमात्मा को, प्रवचन के द्वारा अथवा बहुत से तर्क-वितर्क के द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता है, बहुत से ग्रन्थों के श्रवण के द्वारा भी उनको प्राप्त नहीं किया जा सकता है। हाँ, जो शरणागत - भक्त है एकमात्र

प्रभु को ही जो अपना सर्वस्व मानकर स्वीकार करते हैं तथा भगवान श्रीहरि जिनको अपना आश्रित रूप से ग्रहण करते हैं, केवल उनके पास ही भगवान अपना अप्राकृत स्वरूप प्रकाश करते हैं तथा वे परम भाग्यशाली भक्त ही उन्हें प्राप्त कर सकते हैं।

श्रीमद्भागवत में ब्रह्मा जी भगवान श्रीकृष्ण जी की स्तुति करते हुए कहते हैं—

अथापि ते देव पदाम्बुजद्वय -
प्रसादलेशाऽनुगृहीत एव हि ।
जानाति तत्त्वं भगवन् महिम्नो न चान्य
एकोऽपि चिरं विचिन्वन् ।

(श्रीमद् भागवत महापुराण 10/14/29)

अर्थात् हे देव! जिसे आप के पादपद्मों की लेश मात्र भी कृपा प्राप्त हुई है, केवल वह ही, आप का यथार्थ माहात्म्य जान सकता है; किन्तु जो दीर्घकाल से अनुमान द्वारा केवल शास्त्रों को उलट-पुलट कर आपका अन्वेषण करते हैं, उनमें से कोई भी, आपके तत्त्व को जानने में समर्थ नहीं हुआ है।

अतः श्रीमहाप्रभुजी के सम्बन्ध में उनका वास्तविक तत्त्व, अनभिज्ञ व्यक्तियों को समझाने के लिये, श्रीमन्महाप्रभुजी की भगवत्ता के

सम्बन्ध में कुछ शास्त्र - प्रमाणों का यहाँ उल्लेख किया जा रहा है: —

श्वेताश्वतर (3 / 12) उपनिषद् में कहते हैं -

महान् प्रभुर्वै पुरुषः सत्त्वस्यैष
प्रवर्तकः।
सुनिर्मलामिमां शान्तिमीशानो
ज्योतिरव्ययः ॥

अर्थात् वह पुरुष महाप्रभुजी, बुद्धिवृत्ति के प्रवर्तक हैं। सुनिर्मल अर्थात् सर्वदोषवर्जित शान्तिप्रदाता हैं, वे ज्योतिर्मय अर्थात् मूर्तिमान् होते हुए नित्य हैं; साधारण दुनियावी

पदार्थों या प्राणियों की तरह नाशवान नहीं हैं। -

यदा पश्यः पश्यते रुक्मवर्णं
कर्त्तारमीशं पुरुषं ब्रह्मयोनिम्।
तदा विद्वान् पुण्यपापे विधूय निरन्जनः
परमं साम्यमुपैति।।
(मुण्डक उपनिषद 3/ 3)

अर्थात् जिस समय, वह जीव, हेमवर्ण- विग्रह, सर्वान्तर्यामी, जगत के कर्ता एवं ब्रह्माजी के भी पिता, ईश्वर का दर्शन करता है, तब वह विद्वान, पुण्य और पापों को छोड़कर प्रकृति से बने देह और देह के तमाम सम्बन्धों से रहित होकर, निर्मलता और परम

समता को प्राप्त होता है। (भगवान श्रीहरि का हेमवर्ण विग्रह अर्थात् तपाये हुए सोने के समान विग्रह श्रीचैतन्य महाप्रभु जी के रूप में ही है)

कस्मिन् काले स भगवान् कि वर्णः
कीदृशो नृभिः।
नाम्ना वा केन विधिना पूज्यते
तदिहोच्यताम्।।
(श्रीमद् भागवत महापुराण 11/5/19)

राजा निमिजी ने नौ - योगेन्द्रों को पूछा— हे योगीश्वरो ! आप लोग कृपा करके यह बतलाइये कि भगवान, किस समय किस रंग का व कौन सा आकार स्वीकार करते हैं और किन

नामों से वे जाने जाते हैं तथा किन विधियों से मनुष्य उनकी उपासना करते हैं।

प्रश्न के उत्तर में श्रीकरभाजन ऋषि कहते हैं

इति द्वापर उर्वीश स्तुवन्ति
जगदीश्वरम्।
नानातंत्रविधानेन कलावपि तथा
श्रृणु।।
कृष्णवर्णं त्विषाऽकृष्णं
सांगोपांगस्त्रपार्षदम्।
यज्ञैः संकीर्तनप्रायैर्यजन्ति हि
सुमेधसः ।। -

(श्रीमद् भागवत महापुराण 11/5 / 31-32)

अर्थात् नौ योगेन्द्रों में से श्रीकरभाजन जी कहते हैं कि उपर्युक्त प्रकार से, द्वापर युग के लोग, जगदीश्वर की तन्त्र शास्त्र में दिये गये विभिन्न विधानों के अनुसार स्तुति करते थे। अब वे जगदीश्वर ही, कलियुग में अवतीर्ण होने पर, जिस प्रकार नाना तन्त्रों के विधानों के द्वारा पूजित होते हैं, उसे बतला रहा हूँ, श्रवण करो।

जो, 'कृष्+ण' इन दो वर्णों का कीर्तन करते हैं, अथवा अथवा सभी

को श्रीकृष्ण नाम करने का उपदेश करते हैं या 'कृष्ण' इन दोनों वर्गों के कीर्तन के द्वारा कृष्णानुसन्धान में सर्वदा तत्पर रहते हैं; जिनके अङ्ग श्रीनित्यानन्द प्रभु और श्रीअद्वैत प्रभु हैं, जिनके उपाङ्ग हैं तथा जिनका अस्त्र उनके ही आश्रित श्रीवासादि शुद्ध भक्त हरिनाम शब्द है और जिनके पार्षद श्रीगदाधर, दामोदर स्वरूप, रामानन्द, सनातन व रूप गोस्वामी आदि हैं, जो कान्ति से अकृष्ण अर्थात् पीत (गौर) हैं; उन्हीं बर्हिगौर राधाभावद्युति सुवलित श्रीगौरसुन्दर की कलियुग में सुमेधागण (बुद्धिमान लोग)

संकीर्तनरूपी प्रधान यज्ञ के द्वारा आराधना करते हैं।

नाम - संकीर्तन इस कलियुग का प्रधान धर्म है। इसको युगावतार ही प्रकाश कर सकते हैं। इसलिये साक्षात् श्रीकृष्ण ही श्रीचैतन्य महाप्रभुजी के रूप से श्रीनवद्वीपधाम में अवतीर्ण हुए थे।

आसन् वर्णास्त्रयो ह्यस्य गृहतोऽनुयुगं तनुः ।
शुक्लो रक्तस्तथा पीत इदानीं कृष्णतां गतः ।।

(श्रीमद् भागवत महापुराण 10 / 8 / 13)

श्रीकृष्णचन्द्रजी के नामकरण के समय में, श्रीनन्द महाराज जी से श्रीगर्गाचार्यजी कहते हैं यह, तुम्हारा साँवला पुत्र, प्रत्येक युग में ही आता है और अलग- अलग श्रीविग्रह धारण करता है। सत्ययुग में इसका वर्ण श्वेत था; त्रेता में रक्तवर्ण था, कलि में पीतवर्ण था और अब द्वापर में श्यामवर्ण है। चूँकि इस युग में इसका वर्ण श्याम है, इसलिए इसका नाम 'कृष्ण' होगा। -

इस श्लोक में 'पीत' शब्द कलिपावनावतारी श्रीगौरांग महाप्रभुजी का ही बोधक है।

इत्थं नृतिर्यगृषिदेवझषावतारै-र्लोकान्
विभावयसि हंसि जगत्प्रतीपान्।
धर्मं महापुरुष पासि युगानुवृत्तं छन्नः
कलौ यदभवस्त्रियुगोऽथ स त्वम् ।।
(श्रीमद् भागवत महापुराण 7/9 / 38)

अर्थात् भक्त श्रेष्ठ प्रह्लादजी, श्रीनृसिंहदेव जी की स्तुति करते हुए कहते हैं— हे पुरुषोत्तम ! इस प्रकार आप मनुष्य, पशु, पक्षी, ऋषि, देवता और मत्स्यादि अवतार लेकर, लोकों का पालन तथा विश्व के द्रोहियों का संहार करते हो। इन अवतारों के द्वारा आप प्रत्येक युग में युगानुरूप धर्म की रक्षा करते हो, परन्तु कलियुग में तो, आप छिपकर गुप्तरूप से अवतार

धारण करते हो। इसलिए आप का नाम "त्रियुग" भी है।

यहाँ पर गुप्तावतार से श्रीकृष्ण चैतन्यावतार का बोध होता है क्योंकि श्रीचैतन्य महाप्रभु जी का अवतार ही प्रछन्नावतार अर्थात् सभी भगवान के अवतारों में ये अवतार ही छुपा हुआ अवतार है।

सुवर्णवर्णो हेमांगो वरांगश्चन्दनांगदी |
सन्यासकृछमः शान्तो निष्ठा शान्तिः
परायणमः ||

(महाभारत दानधर्मपर्व 149 अध्याय)

जो सुवर्णवर्ण, तपाये हुए सोने जैसे अंग, सर्वांग सुन्दर गठन, चन्दन - माला से सुशोभित, संन्यास आश्रम - ग्रहणकारी, शम - दम आदि गुणों वाले, हरिकीर्तन रूप महायज्ञ में निष्ठायुक्त और निवृत्तिपरायण हैं— भगवान के सभी अवतारों में से ये सभी लक्षण, श्रीचैतन्य महाप्रभु में ही देखे जाते हैं।

अहमेव क्वचिद् ब्रह्मन् -
संन्यासाश्रममाश्रितः ।
हरिभक्तिं ग्राहयामि कलौ
पापहतान्नरान् ॥

(उपपुराण, चै० च० आ० 3 / 82)

अर्थात् भगवान श्रीकृष्ण जी व्यासदेवजी से कहते हैं—

हे व्यासदेव जी! तमाम पापों से पीड़ित जीवों के कल्याण के लिए मैं ही गुप्त रूप से अवतार धारण कर के तथा संन्यास आश्रम का अवलम्बन कर के कलियुग में जीवों से हरि - भक्ति करवाता हूँ।

अहमेव द्विजश्रेष्ठ नित्यं
प्रच्छन्नविग्रहः।
भगवद्भक्तरूपेण लोकान् रक्षामि
सर्वदा।।

—आदिपुराण

अर्थात् भगवान कहते हैं— मैं ही, नित्य प्रच्छन्नविग्रह ब्राह्मण श्रेष्ठ होकर, भगवद् - भक्त रूप से, अपने भक्तों की सदा रक्षा करता हूँ। (यह सब, श्रीगौरांगदेव जी में ही स्पष्ट रूप से देखा जाता है।)

गगांया दक्षिणेभागे नवद्वीपे मनोहरेः ।
कलिपापविनाशाय शचीगर्भे
सनातनः॥
जनिष्यति प्रिये मिश्र पुरन्दरगृहे
स्वयम् ।
फाल्गुने पौर्णमास्यां च निशायां
गौरविग्रहः ॥

—विश्वसार तंत्र

अर्थात् महादेव जी पार्वती देवी जी को कहते हैं— हे प्रिये! गंगा के दहिनी ओर मनोहर नवद्वीप धाम में, भगवान श्रीकृष्ण ही कलियुग के पापों का विनाश करने के लिये, फाल्गुनी पूर्णिमा की रात्रि में, मिश्रपुरन्दर श्रीजगन्नाथ मिश्र के घर में तथा श्रीशचीदेवी के गर्भ से, गौर रूप में आविर्भूत होंगे।

ततः काले च संप्राप्ते कलौ कोऽपि महानिधिः ।
हरिनाम प्रकाशाय गंगातीरे जनिष्यति।।

—कुलार्णव - तन्त्र

अर्थात् महादेवजी पार्वती जी को सम्बोधित करते हुए कहते हैं— पार्वती ! इसके बाद कलियुग के प्रारम्भ में, हरिनाम का प्रचार करने के लिये, गंगातट पर कोई सम्पूर्ण सद्गुणों की निधि, जन्म ग्रहण करेंगे।

कलेः प्रथमसन्ध्यायां गौरांगोऽसौ महीतले।
भागीरथीतटे पुण्ये भविष्यति शचीसुतः।।
(भविष्यपुराण का ब्रह्मखण्ड 7 वाँ अध्याय)

अर्थात् कलि की प्रथम सन्ध्या में, यही श्रीगौरांगदेव, भूतल में पवित्र

भागीरथी के तट पर श्रीशचीनन्दन रूप से अवतीर्ण होंगे।

* * * * * * *

श्रीलगुरुदेव